International Journal of Applied Research 2015; 1(1): 64-65

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(1): 64-65
www.allresearchjournal.com
Received: 12-12-2014
Accepted: 31-12-2014

डॉ० बी.के. गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग हिन्दू कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ० बी.के. गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग हिन्दू कॉलेज, सोनीपत (हरियाणा)

स्वामी विवेकानंद की शैक्षिक संकल्पना और स्वरूप

डॉ० बी.के. गर्ग

19वीं शताब्दी के मध्य जिस समय विदेशी एवं विधर्मी शक्तियाँ भारतीय स्वाभिमान एवं पहचान को पददलित करने में मन–प्राण से लगी हुई थीं, ऐसे समय में भारत माता के अनेक स्वाभिमानी बेटे बेटियाँ इस की अस्मिता की रक्षा के संघर्ष–यज्ञ में मन प्राण से जुटे हुए थे। सम्पूर्ण स्वाधीनता संघर्ष देखने में भले ही राजनीतिक लगता हो परंतु इस राजनीति को शक्ति प्रदान करने में धर्म, दर्शन, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य, भाषा, कला आदि क्षेत्रों में कर्मरत योगी भारतीयता की रक्षा और उसकी गुणवत्ता का बोध कराने में पूरे जीवन से लगे हुए थे। यही कारण है कि भारत के स्वाधीनता आंदोलन को भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के नाम से भी अभिहित किया जाता है।

यह सर्वविदित है कि भारत ने कभी भी भारतीय अस्मिता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए तामसिक एवं राजसिक तत्त्वों की परिचायक आक्रामकता का सहारा नहीं लिया बल्कि इस संदर्भ में सात्विकता की परिचायक रक्षात्मकता को ही प्राथमिकता दी है।

भारतवर्ष की अस्मिता को धूमिल करने के अनेक घृणित प्रयासों में 5 सितम्बर 1827 को ईस्ट इंडिया कम्पनी के निदेशकों द्वारा गवर्नर जनरल को लिखा पत्र और वर्ष 1834 में भारत आए लार्ड मैकॉले द्वारा भारतीय शिक्षा और भाषा संबंधी दिए गए आदेश–निर्देश उल्लेख्य हैं, जिनका एक मात्र उद्देश्य भारतीय गौरव, सम्मान एवं पहचान को धूल धूसरित करना था। परंतु भारत की संत एवं सात्विक शक्तियों ने ऐसे षड्यंत्रों को जिस ऊर्जा से रोकने का प्रयास किया, उनमें पं. मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानंद एवं स्वामी विवेकानंद का अप्रतिम स्थान है। पं. मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना करके, स्वामी श्रद्धानंद ने शिक्षा को वैदिक चेतना से मंडित करके और स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा की मानवीय, आध्यात्मिक अवधारणा प्रस्तुत कर विश्व को चमत्कृत एवं भारत को आत्म सम्मान के लिए प्रेरित किया।

सभी मनीषी निश्चित रूप से अप्रतिम स्थान रखते हैं परंतु विवेकानंद जी का प्रयास एवं प्रभाव गहन और आन्तरिक है। यद्यपि स्वामी जी ने किसी शिक्षा शास्त्र की रचना नहीं की, तथापि उनके द्वारा सर्वजन के कल्याण हेतु दिए गए कालजयी संदेशों में शिक्षा जैसा विषय स्वतः समाविष्ट है। स्वामी जी के अनुसार– 'शिक्षा वह है, जिससे हम अपना जीवन–निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें।

स्वामी जी की शिक्षा संबंधी संकल्पना को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता हैः

- स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व का निर्माण है। शिक्षा वह माध्यम है जो मानवीय चेतना को जागृति एवं उसकी अभिव्यक्ति का सामर्थ्य प्रदान करती है।
- वे शिक्षा में भारतीय मूल्यों का समर्थन करते हुए मन की एकाग्रता और ब्रह्मचर्य को अनिवार्य मानते हैं। उनके अनुसार ब्रह्मचर्य की तेजमय आभा के समक्ष संसार की समस्त विनाशकारी शक्तियाँ क्षीण होकर अस्तित्वहीन हो जाती हैं। इसी ब्रह्मचर्य की शक्ति के कारण ही हनुमान जी पहाड़ उठा पाए और भीष्म पितामह जी ने मृत्यु को वश में कर लिया।
- वे भारतीय गुरूकुल प्रणाली के समर्थन के साथ–साथ ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु को व्यापार बनाने के प्रखर विरोधी रहे हैं।
- स्वामी जी की अवधारणा है कि जिस प्रकार पौधे के प्राकृतिक विकास में माली तो सहायक मात्र होता है, उसी प्रकार बच्चे की शिक्षा में शिक्षक, माता–पिता, अभिभावक की भूमिका केवल शिक्षोपयुक्त वातावरण एवं निरीक्षक तक सीमित है। वे बच्चों को बलपूर्वक पढ़ाने का विरोध करते हैं क्योंकि इससे बच्चों का सहज विकास अवरूद्ध हो जाता है।
- वे नारी के सशक्तीकरण एवं संस्कारीकरण हेतु नारी शिक्षा को अनिवार्य मानते हैं। जिस प्रकार पुत्र अपने जीवन के प्रारंभिक चरण में शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रेरित किए जाते हैं, उसी प्रकार पुत्रियाँ भी हों। अन्यथा भारत की स्त्रियों को असहाय बन, आँसू बहाने के सिवा और कोई मार्ग नहीं सूझेगा।
- शिक्षा की सर्व सुलभता का पक्ष लेते हुए स्वामी जी का कथन है कि जब तक करोड़ों मनुष्य मूर्ख

और अज्ञानी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तब तक मैं उस प्रत्येक मनुष्य को देशद्रोही मानता हूँ, जो उस अज्ञानी के व्यय से शिक्षित होकर उस अज्ञानी की ओर ध्यान नहीं दे रहा। वे जनसमुदाय की अवहेलना को राष्ट्रीय पाप की संज्ञा देते हैं।

- शिक्षा में धर्म के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वे कहते हैं कि धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने मात्र से, तर्क–वितर्क से हम धार्मिक नहीं बनेंगे बल्कि धर्म का स्वतः प्रत्यक्ष अनुभव करके उसके अनुसार आचरण करने से ही हम धार्मिक होने के अधिकारी बन सकते हैं। वे धर्म विशेष की अपेक्षा सभी धर्मों की आवश्यक एवं प्रमुख प्रवृत्तियों को शिक्षा में समाविष्ट करने का समर्थन करते हैं। वे शिक्षण–संस्थाओं में किसी धर्म विशेष को शिक्षा का अंग बनाना भी उचित नहीं मानते।
- उनके अनुसार शिक्षा जीवन की मूलभूत भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ होनी चाहिए।
- स्वामी जी शिक्षा में पाश्चात्य विज्ञान और वेदांत को समायोजित करने के पक्षधर रहे हैं, क्योंकि दोनों के समाहार से विश्व में समृद्धि और शांति के युग का अवतरण संभव है।
- शिक्षा के प्रचार–प्रसार का बड़ा सरल और व्यावहारिक पक्ष रखते हुए स्वामी जी का मत है कि जो बच्चे पाठशाला इसलिए नहीं जा पाते कि उन्हें परिवार को गरीबी से उबारने के लिए पिता के साथ खेत में काम करना पड़ता है, ऐसे बच्चों को हम उन सहस्रों निष्ठावान संन्यासियों के द्वारा घर पर ही शिक्षित करने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसा तभी संभव है यदि हम इन संन्यासियों को आधुनिक विषयों के शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित एवं संगठित कर सकें।

सारांश यह है कि स्वामी जी की शिक्षा की संकल्पना के अंतर्गत मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, भौतिक, आध्यात्मिक अर्थात सर्वांगीण विकास को समाहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. मेरा भारत अमर भारत – स्वामी विवेकानंद जी
2. भारत–जागरण – स्वामी विवेकानंद जी
3. विवेकानंद ने कहा था – सम्पादक डॉ. गिरिराज शरण
4. विश्व के महान शिक्षा शास्त्री – डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद शर्मा
5. स्वामी विवेकानंद के शिक्षा–विषयक विचार – स्वामी आत्मप्रियानंद